International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वदर्भ में कसानों की आत्महत्या के कारणों और सरकार द्वारा कए गए उपायों का अध्ययन

प्रा. केवळ हरिदास क-हाडे
कर्म वर महा वद्यालय मूल, जि. चंद्रपुर

प्रस्तावना:

पछले कुछ वर्षों में कसान आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या के कारण वदर्भ सु र्खयों में आया है। यद्य प भारत ने **1991** से एक नया आ र्थक दृष्टिकोण अपनाया है, रोजगार में वृ द्ध धीमी रही है और कृ ष उत्पादन में वृ द्ध असंतोषजनक रही है। महाराष्ट्र में वदर्भ कसान आत्महत्याओं का केंद्र बन गया है। कसान बहुत ऋणी है और अवसाद से ग्रस्त है। ले कन अकेले अवसाद ही आत्महत्या करने का एकमात्र कारण नहीं है। इसके लए कई कारण हैं। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में आत्महत्या की दर सबसे अ धक है। पूरे महाराष्ट्र में, पश्चिम वदर्भ के जिलों में यानि अमरावती, अकोला, बुलढाणा, वा शम, यवतमाल में आत्महत्याओं की संख्या अ धक है। महाराष्ट्र में कुल आत्महत्याओं में से **70%** पश्चिम वदर्भ में हैं। यह वदर्भ में कसान की आत्महत्या की प्रकृति को दर्शाता है। कसान आत्महत्या को रोकने के लए, दिसंबर **2005** में, माननीय मुख्यमंत्री ने पैकेज की घोषणा की और जुलाई **2006** में माननीय मुख्यमंत्री ने वदर्भ में छह जिलों के लए पैकेज की घोषणा की थी। इसका भी कोई असर नहीं हुआ। उसके बाद भी, कसान आत्महत्या सत्र नहीं रुका। यह अब भी जारी है। इस लए, वदर्भ में कसानों की आत्महत्याओं के कारणों का पता लगाने के लए, वदर्भ में कसानों की आत्महत्याओं को कम करने के लए सरकार द्वारा कए गए उपायों का पता लगाने और वदर्भ में कसानों की आत्महत्याओं की प्रकृति को समझने के लए, शोध वषयों को चुना गया है।

अनुसंधान निबंधों के लए प्रयुक्त अनुसंधान व धयाँ:

वर्तमान शोध प्रबंध के लए उपयोग की जाने वाली जानकारी और तथ्यों को वषय से संबं धत व भन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से संक लत कया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1) वदर्भ में कसानों की आत्महत्या के कारणों का पता लगाना।

2) वदर्भ में कसानों की आत्महत्या को कम करने के लए सरकार द्वारा कए गए उपायों का अध्ययन करना।

3) वदर्भ में कसान आत्महत्या की प्रकृति को समझना।

4) कसान आत्महत्या की समस्या के समाधान हेतु उपाय सुझाना।

अनुसंधान की आवश्यकता और महत्व:

महाराष्ट्र में वदर्भ कसान आत्महत्याओं का केंद्र बन गया है। कसान बहुत ऋणी है और अवसाद से ग्रस्त है। ले कन केवल अवसाद ही आत्महत्या करने का एकमात्र कारण नहीं है। इसके लए कई कारण हैं। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में आत्महत्या की दर सबसे अ धक है। पूरे महाराष्ट्र में, पश्चिम वदर्भ के जिलों में यानि अमरावती, अकोला, बुलढाणा, वा शम, यवतमाल में आत्महत्याओं की संख्या अ धक है कसान आत्महत्या के मुद्दे को दूर करने के लए उपाय कए जाने चाहिए, आत्महत्या करने वाले कसानों को तत्काल वत्तीय सहायता प्रदान करें और आत्महत्या को रोकने के लए एहतियाती उपाय करें। सबसे पहले, आत्महत्या करने वाले परिवार को समाज और सरकार से भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, उन्हें सरकारी सहायता दी जानी चाहिए। इस संबंध में, वदर्भ में कसानों की आत्महत्या के कारणों और सरकार द्वारा कए गए उपायों का अध्ययन करना आवश्यक है। इस वजह से, आज व्यापक शोध की आवश्यकता है और इसी लय यह शोध महत्वपूर्ण है।

वदर्भ में कसानों की आत्महत्या के कारण:

कृ ष उत्पादन की लागत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हाइब्रिड बीज, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों जैसे व भन्न कृ ष आदानों की कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। इस कारण, बुवाई की लागत फर से बढ़ जाती है। इन सभी कारकों के कारण, प्रति एकड़ कृ ष की लागत में काफी वृ द्ध हो रही है। कृ ष से होने वाली आय उस सीमा तक नहीं बढ़ती है। कसानों को कृ ष उत्पादन के लए कृ ष मूल्य आयोग द्वारा दी गई गारंटी भी नहीं मल रही है। कृ ष उत्पादन पर व्यय अ धक है और कृ ष आय कम है, परिणामस्वरूप, वदर्भ में कसान आत्महत्या कर रहे हैं।

वदर्भ में कसान आत्महत्याओं का एक अन्य कारण ऋण बंधन है। कसान को फसल के उत्पादन की लागत को कवर करने के लए पर्याप्त मूल्य नहीं मलता है। इस लए उसे हर साल कर्ज लेना पड़ता है। प्राकृतिक कटाई के कारण अपे क्षत फसल भी नहीं आ रही है। नई फसलों के लए फर से ऋण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, कसान को अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लए खर्च करना पड़ता है। वह त्योहारों, शादियों, बीमारियों और धा र्मक समारोहों के लए भी पैसा खर्च कर देता है। साथ ही बच्चों को शक्षा, च कत्सा और भोजन के लए ऋण पर निर्भर रहना पड़ता है। इन सभी बोझ के तहत वदर्भ के कसानों पर अत्याचार कया जा रहा है। वदर्भ में कसानों को अपनी उपज स्थानीय स्तर पर व्यापारियों को कम कीमतों पर बेचना पड़ता है। वे सावकर को अ धक ऋण के लए आधार मानते हैं। इसी वजह से उधार का पहाड़ बहुत बड़ा हो जाता है। ऋण पर

ब्याज दर जितनी अ धक होगी, ऋण उतना ही अ धक होगा। इन सभी परिस्थितियों के कारण, वदर्भ के कसान निरशा के भावर में जाकर आत्महत्या कर रहे हैं।

वदर्भ में कसानों को अपने कृ ष उत्पादन के लए बारिश के पानी पर निर्भर रहना पड़ता है। जरूरत पड़ने पर फसलों को पानी नहीं मलता है। वदर्भ में संचाई सु वधाओं का अभाव है। शोधकर्ताओं का मानना है क वदर्भ में संचाई में सबसे ज्यादा बैकलॉग है। कसान संचाई के लए कुओं और बोरवेल की मदद लेने की को शश करते हैं। हालाँ क, सरकारी सहायता समय पर और पर्याप्त रूप से प्राप्त नहीं होती है। इसके लए, कसानो को ऋणदाता के ऋण पर निर्भर रहना पड़ता है। वदर्भ में कसान आत्महत्याओं पर कए गए एक अध्ययन से पता चला है क आत्महत्या करने वाले **90** प्रतिशत से अ धक कसान सूखे के कारण त्रस्त थे। संचाई की अपर्याप्त सु वधाओं के कारण, कसान की आत्महत्या के लए सूखे की खेती की उच्च दर एक कारण है।

वदर्भ में कृ षपूरक व्यवसाय की कमी है। डेयरी फा र्मंग, कुल्कुट पालन, बकरी पालन, सुअर पालन जैसे उद्योग कृ ष में पूरक व्यवसाय हैं। कसानों के पास पूंजी का अभाव है। इस लए, वह कृ षपूरक व्यवसाय को नहीं अपना सकता। कृ षपूरक व्यवसाय नहीं होने के कारण उनकी आय में वृ द्ध नहीं की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, यदि वह कृ षपूरक व्यवसाय शुरू करने में वफल रहता है, तो वह समाप्त हो जाता है। वदर्भ में कृ षपूरक व्यवसाय की कमी आत्महत्याओं के लए अग्रणी कारण है। वदर्भ में भू म का आकार छोटा होता जा रहा है, इस लए जमीन के एक छोटे से टुकड़े पर खेती कसान के लए करना आसान नहीं होता। यदि खेत का आकार छोटा है, तो कसान अच्छी गुणवत्ता के बीज और अन्य उपकरणो पर खर्च नहीं कर सकता है। इन सभी घटकों की उत्पादन लागत अ धक है। भू म वखंडन कसानों के सामने एक बड़ी समस्या है। छोटे पैमाने पर खेतों में संचाई की सु वधा संभव नहीं है। वदर्भ में कसान परिवार को छोटे पैमाने पर खेती करने के लए पर्याप्त आय नहीं है।

वदर्भ में, संयुक्त परिवार प्रणाली में गरावट आ रही है। संयुक्त परिवार प्रणाली में, जो खम और जिम्मेदारी का वभाजन होता है। परिवार के सदस्यों द्वारा आपसी तनाव, झगड़े को समाप्त कया जाता है। अलग परिवार प्रणाली हर जगह हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहर में भी, संयुक्त परिवार प्रणाली टूट गई है, इस लए कसान को एक कठिन परिस्थिति में जो भावनात्मक समर्थन मलता था वह लगभग चला गया है। परिवार के मु खया को सभी तनावों को सहन करना पड़ता है। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में भी, व भन्न परिवारों के अंतर-संबंध अब नीरस नहीं हैं। परिणामस्वरूप, तनाव बढ़ रहा है और यह परिवार के मु खया की आत्महत्या में बदल रहा है।

कृ ष के लए समय पर बीज, कीटनाशक, रासायनिक खाद आदि की प्राप्ति की आवश्यकता होती है। निजी कंपनियां अ धक मुनाफे के लए बाजार में नकली और कम अंकुरण के बीज बेच रही हैं। इन बीजों की अंकुरण क्षमता कम होती है। नतीजतन, कसान को दोहरी बुवाई करनी पड़ती है। वे रासायनिक उर्वरकों की कृत्रिम कमी पैदा करके कसानों को उच्च कीमतों पर उर्वरक बेचते हैं। ये सभी कारक कसान की कुल उत्पादन लागत को बढ़ाते हैं। और कृ ष उत्पादन घट रहा है। वदर्भ में पर्याप्त संचाई की सु वधा नहीं है। वदर्भ कृ ष वर्षा जल पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

आधारित है। इस लए, कसान को नरंतर सूखे का सामना करना पड़ता है। वदर्भ में संचाई काफी हद तक कुओं और कू पका पर नर्भर है। बारिश के पानी की कमी से कुओं का स्तर दिन-प्रतिदिन गहराता जा रहा है। इस लए, फसलों की संचाई नहीं की जा सकती है। परिणामस्वरूप, वदर्भ में कसान कम उत्पादकता से पी ड़त हैं।

कृ ष में उत्पादन में अनिय मतताओं के कारण कसान को बच्चों को उच्च शक्षा प्रदान करनी पड़ती है। इस अवसर पर, वह अपने घर और खेत की जमीन को ऋणदाता के पास गरवी रखता है। अगर वही बच्चे शक्षा में असफल हो जाते हैं, तो कसान निराश हो जाता है। निराशा के इस भवर में कसान आत्महत्या जैसा कदम उठा रहे हैं। वदर्भ में कसान आत्महत्या के लए यह एक जिम्मेदार कारक है। वैसेही, ग्रामीण लत भी एक महत्वपूर्ण कारक है। लत से आय का एक बड़ा हिस्सा खर्च होता है। नशा शरीर को न केवल परेशान करता है बल्कि इसकी कार्यक्षमता को भी कम करता है। इससे परिवार में झगड़े होने लगते हैं। नतीजतन, वह कई बीमारियों से ग्रस्त रहता है। व्यसन आत्महत्या के प्रमुख कारणों में से एक है। ग्रामीण क्षेत्रों में, कसान कई तरह के परंपरागत तरीकेसे खेती करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, कसान कई तरह के सामाजिक रीति-रिवाजों, परंपरागत तरीके से जीवन जीते हैं। इन परंपराओं को निभाने में अक्सर अनावश्यक खर्च हो जाता हैं। अक्सर कसान अपनी सी मत आय मे उन परंपराओं को नहीं निभा पाता है। फर कसान कर्ज लेता है।

1991 से देश मे आ र्थक उदारीकरण को अपनाया गया है। वक सत देशों में कृ ष के लए बड़ी सब्सिडी दी जाती है। नतीजतन, कम उत्पादन लागत का परिणाम कम कीमतों में होता है। वे अंतर्राष्ट्रीय बाजार मूल्य को प्रभा वत करते हैं। उनके माल की कीमतें कम रहती हैं। वकासशील देशों में, दूसरी ओर, कसानों को सब्सिडी नहीं दी जाती है। इस लए, उसकी कृ ष उपज की कीमत अ धक है। बाजार मे वकासशील देश के सामान की कीमत नहीं मलती है। ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में भी राजनीति फल-फूल रही है। यह गाँव में गुटबाजी पैदा करता है और सहयोग की भावना को नष्ट करता है। तब से, ईर्ष्या, गुटबाजी, अदालत के मामले जैसे बढ़ गए है यह परिवारों के लए कई समस्याओं का कारण बना है। यह लोगों के लए बहुत सारी समस्याओं का कारण बना है। इससे लोगों में अवसाद बढा है। अंतरंगता हताशा का कारण बन सकती है, जिससे आत्महत्या का कारण बन सकता है। आदानों की कीमत में भारी वृ द्ध, इस प्रकार कृ ष उत्पादन की लागत में वृ द्ध और इस प्रकार उत्पादन में वृ द्ध नहीं होती है। परिणामस्वरूप, कसान की आय प्रभा वत होती है और उपज कम हो जाती है। उच्च उत्पादन और कम आय के कारण, कसान की आय और व्यय मेल नहीं खाते हैं। इसके अलावा, कई सामाजिक रीति-रिवाज परंपराएं हैं जिनका कसान की सी मत आय पर बोझ होता है। आत्महत्या करने का कोई एक कारण नहीं बल्कि कई कारणों का समूह है। वपरीत परिस्थिति में कसान आत्महत्या का कदम उठाता है। ऐसे मामले में, व्यक्ति वर्तमान स्थिति में असहाय होता है और उसे भ वष्य में कोई उम्मीद नहीं दिखती। कोई उम्मीद नहीं दिखती इस लए कसान आत्महत्या जैसा कठोर कदम उठाते हैं।

कसान आत्महत्या को रोकने के लए सरकार द्वारा कए गए उपाय:

कसान आत्महत्याओं को रोकने के लए सरकार ने कई उपाय कए हैं। दिसंबर **2005** में, राज्य सरकार ने वदर्भ में कसान आत्महत्याओं को रोकने के लए **7,107** करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की थी। **2006** में, केंद्र सरकार ने वदर्भ के लए **3,750** करोड़ रुपये के प्रधानमंत्री पैकेज की घोषणा की थी। इसमें छह जिले शा मल थे। अमरावती डवीजन में अमरावती, अकोला, यवतमाल, वा शम, बुलढाणा के अलावा, नागपुर डवीजन में वर्धा जिला शा मल था। **2008** में, **10** राज्यों में कर्ज माफी पैकेज की घोषणा की गई थी। **2015** में सूखा पी ड़तों के लए **7000** करोड़ के पैकेज की घोषणा, जिसमें वदर्भ में कसानों के बिजली बिलों की माफी, सूखा प्रभा वत कसानों के ऋणों का पुनर्गठन, ड्रप संचाई सब्सिडी को फर से शुरू करना, राज्य में तीन नदी जोड़ो परियोजनाओं को मंजूरी, **5** लाख कसानों के साहूकारों से लया गया कर्ज माफी, कृ ष संजीवनी योजना शा मल थी । इसका मार्च **2015** तक वस्तार कया गया था, सूखा प्रभा वत क्षेत्रों में भू-राजस्व की माफी, छात्रों को शक्षण शुल्क में रियायत और बैंकों से ऋण की अनिवार्य वसूली आदि प्रावधान इसमे थे। इसमे सूखा प्रभा वत क्षेत्रों के लए फसल ऋण और कृ ष पंपों के बिजली बिलों की वसूली को नलंबित करने जैसे उपाय कए गए।

कसान आत्महत्या महाराष्ट्र की भू म का अपमान है। कसान आसमानी संकट की चपेट में आ रहा है। बेमौसम बारिश, पूंजी की कमी, कृ ष जिंसों की कम कीमतों ने कसान को संकट में डाल दिया है। इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए, **14** अप्रैल **2015** को, महाराष्ट्र सरकार ने शून्य आत्महत्या अ भयान की घोषणा की। यह अ भयान उन परिवारों पर ध्यान केंद्रित था वे कसान जिन्होने अपनी आय से अ धक उधार लया था, गंभीर बीमारियों वाले सदस्य, सूखी भू म पर खेती करने वाले कसान परिवार, आय का कोई अन्य स्रोत नहीं रखने वाले कसान परिवार, कम आय वाले कसान परिवार ,आदी। इस अ भयान में आत्महत्या प्रवण गाँव के प्रत्येक घर तक पहुँचना, कृ ष व्यवसाय, ऋण, बीमारी, भू म के स्वा मत्व, संचाई, ववाह योग्य बच्चों की जानकारी, प्रत्येक परिवार को सलाह, ऋण चुकाने की क्षमता का निर्माण और आय के स्रोत, वत्तीय सहायता के वकल्प उपलब्ध कराना शा मल है। मान सक रूप से बीमार लोगों के लए योजना और वत्तीय प्रावधान, आत्महत्या से प्रभा वत प्रत्येक गाँव के लए **50** लाख और गाँव के समूहों के लए **10** करोड़ रुपये, यह इस योजना की प्रकृति थी। कसान को चंताजनक स्थिति से राहत देने के लए, आत्महत्या को रोकने के लए कसानों को परामर्श देने के साथ-साथ संयुक्त उद्यमों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। कृ ष और कसानों का वकास कृ ष से संबं धत सरकार की सहायता पर निर्भर कए बिना कृ ष में उ चत प्रबंधन, योजना, व्यावसायिकता के आधार पर प्राप्त कया जा सकता है।

निष्कर्ष:

अध्ययन में पाया गया क देश की अर्थव्यवस्था में कृ ष का महत्वपूर्ण स्थान है। कृ ष के वकास के बिना, मानव जीवन कभी भी खुश और समृद्ध नहीं होगा। बुनियादी मानव खाद्य जरूरतों को केवल कृ ष आधारित उद्योगों के माध्यम से पूरा कया जा सकता है। हालां क केंद्र और राज्य सरकारों ने **2005** में वदर्भ में कसानों की आत्महत्या को रोकने के लए एक पैकेज दिया, ले कन आत्महत्याओं की संख्या में वृ द्ध जारी रही। वदर्भ में कसान आत्महत्याओं पर कए गए एक अध्ययन से पता चलता है क आत्महत्या करने वाले **90** प्रतिशत से

अ धक कसान सूखे से पी ड़त थे। संचाई की अपर्याप्त सु वधाओं के कारण, कसान की आत्महत्या के लए सूखे की खेती की उच्च दर एक कारण है। इस लए, आज वदर्भ में कसानों के वकास के लए सही कार्यक्रम को लागू करना आवश्यक हो गया है।

सुझाव:

1) गांवों में कसान चर्चा बोर्ड स्था पत कए जाएं और गांवों में कई मुद्दों को आपसमे हल कया जाए। इसके अलावा, कसानों का मनोबल बढ़ाया जा सकता है और इस माध्यम से कसानों तक सरकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाई जा सकती है।
2) वदर्भ के संचाई बैकलॉग को भरने के लए उपाय कए जाने चाहिए। समाज में जल प्रबंधन और जल साक्षरता बढ़ाने के लए वर्षा जल का उ चत उपयोग आवश्यक है।
3) यदि कृ ष में ड्रप संचाई का उपयोग कया जाता है, तो कम पानी में अ धक फसलें उगाई जा सकती हैं।
4) अल्पसंख्यक कसानों को कर्ज माफी दी जाए। उधार लेना कोई गंभीर मुद्दा नहीं है, ले कन ऋण चुकाने की अक्षमता एक गंभीर मुद्दा है। उस दिशा में उपाय कए जाने की जरूरत है।
5) कसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज आपूर्ति प्रदान करने के लए एक प्रभावी तंत्र स्था पत कया जाना चाहिए। इसके अलावा, बी-बीजों की बढ़ती कीमतें कसानों के लए सस्ती नहीं हैं। इस लए बीजों पर अनुदान बढ़ाया जाना चाहिए। बीज के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों की कीमत पर नियंत्रण भी आवश्यक है।
6) यदि बाजार में कृ ष उपज की कोई मांग नहीं है, तो सरकार को गारंटी मूल्य वृ द्ध उत्पाद खरीदना चाहिए। यह कसानों को उत्पादन बढ़ाने के लए प्रोत्साहित करेगा।
7) यदि वा णज्यिक बैंक कसानों की ऋण आवश्यकताओं को जानता है और उन्हें समय पर ऋण प्रदान करता है, तो कसानों की पूंजी समस्या को कुछ हद तक कम कया जा सकता है।
8) कसान कृ ष आय के अलावा अन्य उद्योगों के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने में सक्षम होंगे। कसानों को कृ ष आधारित उद्योगों में पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन शुरू करना चाहिए। इसके अलावा आटा चक्की व्यवसाय, परिवहन व्यवसाय, मधुमक्खी पालन आदि भी साइड बिजनेस हैं। इस तरह पूरक व्यवसाय के आधार पर कसानों की आय में वृ द्ध की जा सकती है।
9) प्रसंस्करण उद्योग को बडावा देना चाहिए, खेती की गति व धयाँ मौसमी प्रकृति की हैं। खेत का काम पूरा हो जाने के बाद, कसान कारखाने में काम कर सकेंगे। इससे रोजगार बढ़ेगा और आय बढ़ेगी।
1) कृ ष भू म की म ी का परीक्षण करना आवश्यक है। मृदा परीक्षण कसानों को कृ ष के लए आवश्यक पोषक तत्वों की जानकारी देगा और कृ ष उत्पादन बढ़ाएगा।

ग्रंथ सूची:

1) भारतीय अर्थव्यवस्था, डॉ. स. श्री. मु. देसाई, डॉ. निर्मला भालेराव, निराली प्रकाशन, पुणे, 14 वां संस्करण
2) भारतीय अर्थव्यवस्था, रुद्रदत्त एवं के. पी. एम. सुंदरम, एस. चाँद एंड कंपनी, नई दिल्ली (हिन्दी)
3) भारतीय अर्थव्यवस्था, डॉ. घाटणे व वावरे, निराली प्रकाशन, पुणे, जुलाई- 2010

4) भारतीय अर्थव्यवस्था, रमेश संह, म्यकग्रेव एजुकेशन प्राइवेट ल मटेड, चेन्नई, **9** वां संस्करण

5) स्पर्धा परीक्षा अर्थशास्त्र **-2,** आ र्थक व सामाजिक वकास, डॉ. करण जी. देसले, दीपस्तंभ प्रकाशन, दूसरा संस्करण, अगस्त **2012. (**मराठी**)**

6) Indian Economy - Misra & Puri, Himalaya Publishing House, Mumbai, 2010.

7) The Indian Economy - Sanjiv Verma, Unique Publication, Jan 2013.

समाचार पत्र**:** लोकमत**,** नवभारत, हितवाद

वेबसाइट**:**

- **https://hi.wikipedia.org/wiki/**
- **https://www.patrika.com/national-news/seven-farmers-suicides-per-day-in-maharashtra-975728/**
- **https://www.pravakta.com/farmers-suicide-the-tragedy-where-fate-becomes/**
- **https://www.naidunia.com/special-story-farmers-suicide-in-vidarbha-maharashtra-429057**
- **https://www.bbc.com/hindi/india/2015/04/150403_farmers_suicides_du**
- **https://www.amarujala.com/columns/opinion/half-truth-of-farmer-sucide-hindi**
- **https://www.hindisamay.com/content/10686/1**
- **https://archive.indiaspendhindi.com/cover-story/25471**
- **https://www.haribhoomi.com/12%20Farmers%20in%20Vidarbha%20Commit%20Suicide?infinitescroll=1**